भाकृअनुप – केंद्रीय शुष्क बागवानी संस्थान

श्री गंगानगर राजमार्ग, बीछवाल, बीकानेर -334 006 (राज)

ICAR- CENTRAL INSTITUTE FOR ARID HORTICULTURE

Sri Ganganagar Highway, Beechwal- BIKANER-334 006

e-mail- *ciah@nic.in, www.ciah.icar.gov.in.* Phone-0151-2250960 : Fax-2250145

एडवाईजरी-II, 2021 **दिनांक 06.05.2021**

किसानों के लिए शुष्क बागवानी फ़सलों के बारे में सलाह

1. इस समय खेजड़ी में सांगरी बनकर तैयार हो चुकी है या होने वाली होंगी। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि इन्हे समय पर तोड़कर उनकी ग्रेडिंग जैसे सबसे छोटी व मुलायम, फिर इससे बड़ी व मुलायम व अन्य आदि के रूप में छांटकर उचित पेकिंग करके स्थानीय गाँव, बाज़ार, मंडी आदि में बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त करने की सलाह दी जाती है।
2. लसौड़े के पैडों पर भी लसोड़े के फल बनकर तैयार होना शुरू हो गए हैं। अत: उचित आकार के परिपक्व कच्चे फलों को तोड़कर उनकी अच्छी तरह से ग्रेडिंग-पेकिंग करके स्थानीय बाज़ार, गाँव, मंडी इत्यादि में समय पर बेचकर लाभ लेने की सलाह दी जाती है।
3. इस समय खजूर के पौधों पर फल बनाना शुरू हो गए हैं और उनकी बढ़वार होने लगी है। इस समय फलों पर पक्षियों का प्रकोप बहुत ज्यादा रहता है। अत: किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि फलों को पक्षियों से बचाने के लिए, फल गुच्छों को जाली या एल्डी-मिल्की- यूवी प्लास्टिक बैग (थैला) से ढक दें। परंतु ध्यान रहे कि बैग का नीचला सिरा खूला अवश्य रखें ताकि प्रकाश व हवा बढ़ते फलों को पर्याप्त मात्रा में मिलते रहें। अब खजूर के फलों का बढ़ने का समय है। अत: समय-समय पर खजूर के पेड़ों में उचित रूप से सिंचाई करते रहें।
4. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि अब बेर के पौधों की सभी किस्मों की कटाई-छंटाई का उचित समय है। अत:15-30 मई तक इनकी कटाई-छंटाई का कार्य पूर्ण कर लें। यह अगले वर्ष उचित फलन एवं अधिक उत्पादन के लिए बहुत जरूरी है।
5. **ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई:** किसान भाई रबी फसलों की कटाई के तुरंत बाद मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई अवश्य करें। ग्रीष्मकालीन गहरी जुताई करने से मिट्टी तेज धूप में तपती है जिसके कारण जमीन के अंदर स्थित हानिकारक कीट पतंगे, अंडा, प्यूपा, रोग इत्यादि अधिक तापमान के कारण नष्ट हो जाते हैं। साथ ही खरपतवारों के बीजों की अंकुरण क्षमता तेज धूप से कम या नष्ट हो जाती हैं। मिट्टी पलटने वाले हल से गहरी जुताई मिट्टी की कठोर सतह को तोड़ती है जिससे मिट्टी की जल धारण क्षमता बढ़ती है एवं जल, वायु, प्रकाश व तापमान का संचरण आवश्यक रूप से अच्छा बना रहता है। सामान्यतया: किसान भाई अपने खेत की जुताई 3-4 इंच की गहराई तक ही करता रहता है जिससे इस गहराई पर एक कठोर पर्त बन जाती है जो पौधों की बढ़वार, जल व वायु के संचरण में बाधा उत्पन्न करती है। लेकिन ग्रीष्मकालीन में मोल्ड बोल्ड प्लाऊ (हल) या डिस्क प्लाऊ से 8-10 इंच तक मिट्टी की जुताई करने से मिट्टी की वायु संचरण व जल धारण क्षमता बढ़ जाती हैं जिससे वर्षा का पानी बहकर खेत से बाहर नहीं जाता। यह जुताई खेत के ढाल के विपरीत करनी चाहिए जिससे वर्षा के पानी से मिट्टी के कटाव की समस्या भी काफी हद तक कम हो जाती है।
6. किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि पूर्ववर्ति फसलों के अवशेषों को मृदा में अच्छी तरह से दबाने पर भी लाभ मिलता है जिससे मृदा में जीवांश पदार्थ की मात्रा बढ़ती है जो खेत की मिट्टी को उपजाऊ बनाने में मददगार साबित होती है। साथ ही ऐसा करने से मृदा में लाभदायक सूक्ष्म जीवों की सक्रियता बढ़ जाती हैं जिसमें मृदा में कार्बनिक पदार्थों का अधिक विघटन के कारण मृदा की उर्वरता बढ़ती है।
7. **मिट्टी परीक्षण:-** किसान भाईयों को यह भी सलाह दी जाती है कि 2-3 साल के अंतराल पर अपने खेत की मिट्टी का आवश्यक रूप से जाँच करवानी चाहिए। मृदा परीक्षण से हमें फसल उत्पादन के लिए आवश्यक पोषक तत्व और जैविक कार्बन की मात्रा का पता चलता है और इसी के अनुसार मृदा की उर्वरता एवं फसल उत्पादकता को बढ़ाने में सहायक सिद्ध होता है।
8. इस समय भंयकर कोविड-19 की दूसरी लहर चल रही है। इसके संक्रमण से बचने के लिए किसान भाईयों को सलाह दी जाती है कि अपने खेती कार्य करते समय उचित सामाजिक दूरी (6-7 फीट) बनाए रखें व आवश्यक रूप से मूंह पर उचित प्रकार के मास्क का उपयोग करें। साथ ही अपने हाथों को साबून से समय-समय पर धोते रहें और उचित प्रकार के सेनेटाईजर का भी उपयोग करते रहें। खेत में कार्य करते समय भी अपने मूंह पर मास्क का प्रयोग अवश्य करें तथा किसी भी भीड़-भाड़ वाली जगहों पर अनावश्यक जाने से बचें। इसके साथ ही कृषि कार्यों में उपयोग लिए जाने वाले कृषि औज़ार व मशीन जैसे थ्रेशर, ट्रेक्टर, ट्रोली, हल, स्प्रेयर व अन्य औजारों की सफाई व उचित प्रकार से सेनीटाईजेशन करके ही उपयोग में लेंवें।